

निःशब्द-शब्द

अर्पण

मेरी प्यारी यादें जिनसे सर्वाधिक
गहराई से जुड़ी हैं, जो मेरे जीवन की
सबसे अनमोल धरोहर रहे हैं, जिनके
शुभाशिर्वाद हमेशा मेरे साथ रहते हैं
वह मेरे नानाजी
स्व. आदिनाथ जिन्नाप्पा कुदळेजीको,
मेरा पहला काव्यसंग्रह
समर्पित।

- सचिन शरद कुसनाळे

मन की बात

आज की तेजीसे बदलती दुनिया में साहित्यिक कलाकृती का पठन कुछ कम होते नजर आता है। अत्याधुनिक तकनीकी के साधानोंके इस्तेमाल के चलते भी लोगों के पास वक्त की कमी रहती है। मनुष्य ने अपनी दिलचस्पी के तरीकें बदले हैं। जीवनोपयोगी चिजों में उसकी दिलचस्पी स्वाभाविक है। लेकिन यह बात काफी नहीं है। अपने मन के विविध आयामों को उजागर करने के माध्यमों से उसकी दिलचस्पी कम दिखाई पड़ती है। इसिलिए बेचैनी भी इन्सान का साया बन घूमती है। दिलचस्पी बिना काम यंत्रवत हो जाता है। परिणामस्वरूप नवनिर्माण, खोज एवं नये की स्विकृती के लिए इन्सान खुद को तैय्यार नहीं कर पाता। अंतः निर्मल आनंद की अनुभूती के लिए किसी विषय से सुसंवाद होना जरूरी है। साहित्यकृती का निर्माण भी उसी प्रक्रिया का अंग है।

कविता यह कवि के मन का आयना होती है। कवि के भावविश्व को वह उजागर करती है। जिस तरह की संवेदनशिलता कवि को स्पर्शित करती है, उसी तरह की उमंग-तरंग मन में उमड़ने लगती है। पहली बार मैंने जब कविता लिखी तो मानो मुझे अपनी एक आवाज मिल गई। बहुत सी बातें थी जो व्यक्त होने को बेताब थी, लेकिन उन्हें व्यक्त करने का सही तरीका नहीं मिल रहा था। मानो वह निःशब्द थे। मैं सिर्फ अपनी निजी बात व्यक्त नहीं करना चाहता था, बल्कि उन बातों के संदर्भ में भाष्य भी करना चाहता था। कविता के माध्यम से निजी भावनाएँ व्यक्तिगत न होकर प्रातिनिधिक रूप से प्रकट करने की मनिषा थी। बहुत से लोगों की कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो बेजुबान रहती हैं। निःशब्द रूप से वे व्यक्तित्व पर छायी रहती हैं। आज कल कहने-सुनने के आसार भी

कम हो रहे हैं। बढ़ती आबादी के चलते भी इन्सान अपने आपको अकेला मेहसूस कर रहा है। लेकिन कोई हमेशा अव्यक्त नहीं रह सकता और यह बात ठीक भी नहीं। बहुत सी संमिश्र भावनाओं के कोहराम के बीच में जब मैंने काव्यरूप में शब्दोंको पिरोना शुरू किया तो मुझे अपनी जुबान सी मिल गयी। इस जुबान से मेरी भावनाओं को सही प्रतिमा के रूप में मैं बयान करने लगा।

जीवन में हर कोई भले-बुरे दिनों से गुजरता है। यह बात नहीं है की जीवन के अनुभवों ने सिर्फ मुझे ही सबक सिखाया है ऐसा नहीं, हर कोई बहुत सी विभिन्न-विपरित परिस्थितियों से गुजरता है। तो इन सभी अनुभवों को मैंने एक प्रातिनिधिक रूप में पेश करने की कोशिश की। मेरी कविताएँ एक के बाद एक बनती गई और वे सिर्फ मेरा ही नहीं, मुझ जैसे अनेकों का प्रतिनिधित्व करने कूद पड़ी। मेरा खयाल है की, इन कविताओंकी संकल्पना आम है। आम तौरपर आम आदमी हर दिन इनका कोई ना कोई हिस्सा जीता रहता है।

मेरी कविताएँ मेरे विचारविश्व एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोन को अभिव्यक्त करती हैं। किसी एक प्रकार की कविता यह इसकी विशेषता नहीं। जो भी घटना, प्रसंग, हालात, हकीकत से मैं गुजरा, उनमें से कुछ ने मुझे अधिक सोचने को मजबूर किया। कई बार मेरा संवेदनशील मन विभिन्न परिस्थितियों में भावविभोरता से भर आयी। जब मैं उन भावनाओं को रोक नहीं पाया तो कविता उतर आई। मनकी बात को रखना है, इस संकल्प से लिखना शुरू किया और अपनी क्षमतानुसार मैं मेरी बात पूरी कर सका। जब अनुभवों का मेल होता है तो एक संवाद शुरू होता है। मेरी कविताओं में अगर किसी को शायद अपनी मन की बात नजर आई तो मुझे सही राहपर चलने का संतोष मिलेगा। अगर ऐसी बात नहीं हुई तो भी

मेरी कविताएँ आपने पढ़ी यह मेरा सौभाग्य होगा। प्रस्तुत काव्यसंग्रह यह मेरी पहली पेशकश है। कुछ खामियाँ भी हो सकती हैं। लेकिन इसी बहाने तो आपसे मिलना हुआ। बातों में कुछ कम - जादा भले ही हो जाए, लेकिन संवाद जरूर चलता रहे। बातों-बातों मे हम खो जाएँगे। हर बात शायद आप को जँचे भी और ना भी, लेकिन यह मेरे मन की बात है। आप मुझे अपना समझे या ना समझे लेकिन मैं आपको अपना समझकर ही इन रचनाओं को पेश कर रहा हूँ। मेरी कविताएँ आपको अगर अपनी मन की बात लगी तो मुझे संतोष होगा। निःशब्द रूपी भावनाओं को शब्द रूप में आपके सामने व्यक्त करने का जो अवसर आपने मुझे प्रदान किया इसलिए मैं आपका हार्दिक आभारी हूँ। आशा करता हूँ की आप इस मन की बात का जरूर स्वागत करेंगे।

इस रचना के निर्माण में हिंदी के विशेषज्ञ प्रा. डॉ. भीमराव पाटीलजी ने मार्गदर्शक की भूमिका निभाई है। इसके साथही प्रस्तावना लिखकर मुझे प्रेरित किया। इसलिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ। कवितासागर प्रकाशन के डॉ. सुनिल पाटीलजी ने बड़ी तत्परता से अल्पावधी में उच्चतम तकनीकी की सहाय्यता से इस काव्यसंग्रह को बेहतरीन ढंग से प्रकाशित किया, इसलिए उनका भी मैं शुक्रिया अदा करता हूँ। अन्य ज्ञात-अज्ञात सभी जो इस निर्माण में सहयोगी रहें, उन सभी का हार्दिक आभार।

- सचिन शरद कुसनाळे

अंदर की बात

कविता लिखना कोई आसान काम नहीं है। जो प्रथम 'मन की बात' गंभीरता से सुनता है, उसके बाद 'जन की बात' को अपनी बात मानता है और दोनों को सक्षमता से अर्थपूर्ण शब्दरूप देता है, वही कवि बनता है। इसके लिए साधना की जरूरत होती है। पठन, मनन, चिंतन और लेखन की आवश्यकता होती है।

किताबों के साथ-साथ मनुष्य को पढ़ने की आदत होनी चाहिए। दुसरो के सुख-दुःख को मानसिक स्तर पर अपना मानने की नितांत आवश्यकता रहती है। संयोगवश कवि श्री. सचिन कुसनाळे के पास ये सारी बातें मौजूद हैं। उनका व्यक्तित्व कवि के लिए उपयुक्त गुणों से संपन्न है। तभी तो प्राथमिक अध्यापक होते हुए भी उन्होंने काव्यजगत में सफलतापूर्वक आगमन किया है। उनका यह आगमन प्रशंसनीय तो है ही, इसके साथ प्रेरणादायी और अनुकरणीय भी है।

"निःशब्द-शब्द" यह उनका प्रथम प्रयास है। इसमें कुल 56 कविताओं का समावेश किया है। सभी कविताओं में विषयों की विविधता है। कवि का भावविश्व जितना समृद्ध होता है, उतनी विषयों में विविधता आ जाती है। कविता के शीर्षक पढ़कर इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। जैसे - निःशब्द, शून्य, राज, निहाल, मजाल, तकाजा, जमीर, आगाज और शब्द आदि। ये सभी शीर्षक अर्थपूर्ण और पाठकों को कविता पढ़ने के लिए प्रेरित करनेवाले हैं। इतनाही नहीं, सभी कविताएँ पाठकों को अपने जीवन की व्यथा वेदनाओं से जोड़नेवाली हैं। हर एक की जीवनगाथा उजागर करनेवाली लगती है। पाठक के मन में छिपी हर बात को कवि ने अपनी कविताओं में व्यक्त करने की कोशिश की है। जैसे -

**"देखते तो बहुत है,
लेकिन दृष्टि कहाँ से आए" (दृष्टि)**

**"चाँद सितारे तुम ना तोड़ो,
अपनी औकात तुम पहचानो" (बड़प्पन)**

**"इन्सान बिकता है और भगवान सस्ता है,
मौत हँसती और जिंदगी रोती है" (गड़बड़)**

और -

**"बेरहम इन्सान भी रहम चाहता है,
पत्थर दिल भी फूल चाहता है" (ज़मीर)**

ये सारी कविताएँ पाठकों को अपनी लगती हैं। इसलिए कवि सचिन कुसनाळे बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं। काव्यसंग्रह का शीर्षक **"निःशब्द-शब्द"** सृजन प्रक्रिया को अभिव्यक्त करनेवाला है। कवि के मन में कविता का जन्म कैसे होता है, यह स्पष्ट करनेवाला है।

'कवितासागर प्रकाशन' के प्रकाशक मित्रवर्य डॉ. सुनिल दादा पाटीलजी ने बड़ी लगन से काव्यसंग्रह को आकर्षक बनाया है। कवि के मन में छिपी भावनाओं को मुखपृष्ठ पर उतारने की कोशिश श्री. श्रीकांत शिंदे ने अच्छी की है। परिणामस्वरूप मुझे पूरा भरोसा है की आप सभी कविता प्रेमी 'निःशब्द-शब्द' का तहेदिलसे स्वागत करेंगे। हम सभी कविता प्रेमी हैं। अतः मैं इतनाही कहूँगा की -

**हम सब राही है एक राह के,
काव्य को अपनाते चलो |
काव्य होती है हृदय की वाणी,
इसमें सूर मिलाते चलो |
जहाँ होती है निःशब्दता -
वहाँ जन्म लेते है शब्द,
इस राज को समझते चलो।**

- प्रा. डॉ. भीमराव पाटील (हिंदी विभागाध्यक्ष)

डॉ. पंतगराव कदम महाविद्यालय, सांगली - ४१६४१६,

मो. ९४२११३३१७२, dr.bhimraopatil@yahoo.com

काव्यानुक्रम

१. निःशब्द
२. शुभारंभ
३. श्रद्धा-सबूरी
४. दृष्टी
५. मुनाफेखोर
६. बड़प्पन
७. पढ़-लिख
८. गड़बड़
९. शून्य
१०. परतंत्र
११. गडा हुआ
१२. बूमरँग
१३. अधूरी समझ
१४. फर्क
१५. इतनीसी
१६. छोटीसी
१७. सुलझ गई
१८. राज
१९. बेमेल
२०. भव्यता
२१. निहाल
२२. नया सूरज
२३. आँखे खोलो
२४. मजाल
२५. दोरूखा
२६. पैसा
२७. तकाज़ा

२८. लाईलाज
२९. आसार
३०. मिट्टी
३१. आगे बढ़
३२. ढलान
३३. राम भरोसे
३४. बदलते दायरे
३५. किसान-मजदूर
३६. गाना
३७. जागो!
३८. ना!
३९. विश्वास
४०. वक्त
४१. स्वगत
४२. फुरसत से
४३. बेमौसम
४४. बेईमान
४५. दुर्घटना
४६. आम आदमी
४७. अप्रत्याशित
४८. साथ भी...
४९. राम नाम
५०. सर सलामत हो!
५१. ज़मीर
५२. पहेलियाँ
५३. व्यर्थ बात
५४. आगाज
५५. एक
५६. शब्द

१. निःशब्द

निःशब्द एक वक्तव्य है।
अव्यक्त एक बयान है।
मौन एक प्रतिक्रिया है।
खामोशी एक गहराई है।
सुनापन एक अकेलापन है।
बेबसी एक मजबूरी है।
पिड़ा एक तकलीफ है।
गंभीरता एक लगन है।
चेहरा एक आयना है।
दृढता एक विश्वास है।
शांती एक पूर्णता है।
निराशा एक असफलता है।
संकल्प एक शक्ति है।
सँभलना एक आशा है।
उलझना एक आसक्ती है।
अपनाना एक सहवेदना है।
संयम एक भूमिका है।
सहना एक संधी है।
प्रसन्नता एक सुंदरता है।

२. शुभारंभ

शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा एक सफर
जो हर मुकाम को छू लेगा
और एक सिलसिला बन जाएगा
जो अपनी जिंदगी सँवार देगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा एक यज्ञ
जो कठिन तप से संपन्न होगा
और कर्मयोग बन जाएगा
जो कहानी बन सुनाई देगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा एक संघर्ष
जो एक साधना पूरी करेगा
और एक संकल्प सिद्ध होगा
जो एक अध्याय चलता रहेगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा एक पर्व
जो एक इतिहास बना देगा
और एक धरोहर बन जाएगा
जो सिर शान से उठा देगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा एक परिवर्तन
जो एक नई पहचान देगा
और एक परंपरा बना लेगा
जो वर्तमान को स्थापित करेगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

फिर शुरू होगा नया सबेरा
जो बड़े दिन का आरंभ होगा
और जीवन को रोशन करेगा
जो शाम की महफ़ील सजा देगा
शुभ का आरंभ तो होने दो....

३. श्रद्धा - सबूरी

आप-बीती
अहम होती है
पर दुःख
सदा शीतल।
आँखो-देखी
यकीन देती है
कहा - सुनी
सदा अधूरी।
लिखा-पढ़ी
सयानी होती है
गँवार-अनपढ़
सदा बेबस।
लेन-देन
नाता बनाती है
आँख-मिचौली
सदा दिवानी।
होश-जोश
कर गुजरती है
कपो-कल्पना
सदा भटकाती।
दिल-दिमाग
ठिक करती है
ताना-बना
सदा तोड़ती।
हँसी-खुशी
राजी करती है

निंदा-नफरत
सदा उजाड़ती।
डर-खौंफ
पिछे हटाती है
श्रद्धा-सबूरी
सदा सँभालती।

४. दृष्टि

देखते तो बहुत हैं, लेकिन
दृष्टी कहाँ से आए
करते तो बहुत हैं, लेकिन
लगन कहाँ से आए
मिलते तो बहुत हैं, लेकिन
मेल कहाँ से आए
पूजते तो बहुत हैं, लेकिन
श्रद्धा कहाँ से आए
चाहते तो बहुत हैं, लेकिन
समर्पण कहाँ से आए
चलते तो बहुत हैं, लेकिन
सँभालना कहाँ से आए
कथनी तो बहुत हैं, लेकिन
करनी कहाँ से आए
सपने तो बहुत हैं, लेकिन
वास्तव में कहाँ से आए
लोग तो बहुत हैं, लेकिन
अपनापन कहाँ से आए
बाते तो बहुत हैं, लेकिन
हकीकत कहाँ से आए
खाना तो बहुत हैं, लेकिन
भूख कहाँ से आए
बिस्तर तो बहुत हैं, लेकिन
निंद कहाँ से आए
जोश तो बहुत हैं, लेकिन
होश कहाँ से आए

५. मुनाफ़ेखोर

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर बात से कुछ बनती नहीं
खाली जेब मे जमती नहीं
तो काम की बात तुम करते नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं !

अगर हाँ मे हाँ मिलाते नहीं
हमारी जय तुम कहते नहीं
तो तुझमें कोई दम नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर कहना मेरा मानते नहीं
सिर झुकाकर रहते नहीं
तो तुझमें वह तमीज नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर मुझे कुछ मिलता नहीं
देने की तुम्हारी आदत नहीं
तो तेरी कोई जरूरत नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर जेब तुम्हारी खाली है

पेट में जोर से भूख है
तो तू यहाँ ठहरना नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर हाथ पे कुछ रखते नहीं
माल की चाल तुम चलते नहीं
तो तू यहाँ काबील नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

अगर नाम हमारा जपते नहीं
प्रणाम हमे तुम करते नहीं
तो तेरी कोई औकात नहीं

इसमें कोई फायदा नहीं;
मुनाफ़े का वायदा नहीं!

६. बड़प्पन

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

चाँद-सितारे तुम ना तोड़ो
अपनी औकात तुम पहचानो

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

जादू की छड़ी तुम ना घुँमाओ
धूप जो कड़ी तुम वह अजमाओ

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

जमिनी हकीकत तुम ना छोड़ो
हवा के रूख को तुम जान जाओ

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

उल्टे कदम तुम ना चलो
जीवन का सीधापन तुम सिखलो

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

झूठ की शान अब ना दिखाओ
मेहनत की कथाएँ तुम सुनाओ

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

सिर्फ पोथी पढ़ पंडित ना बनो
अतीत को ज्ञान से तुम मिला दो

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

हवा में बंगला तुम ना बाँधो
खुद को तुम दुरुस्त करो

ऐसी बड़ी बातें ना करो....

७. पढ़-लिख

मुझे भी कुछ कहना है।

चुप्पी अब तोड़नी है,
सच्चाई बयान करनी है,
अपनी सफाई देनी है,

मुझे भी कुछ सुनना है।

मन के तराने खोजना है,
कान का तृप्त होना है,
तल्लीन होकर रहना है,

मुझे भी कुछ देखना है।

अपनी राह पहचानना है,
प्रकृति को अपनाना है,
नेत्र को तृप्त कराना है,

मुझे भी कुछ पढ़ना है।

अपने आपको बचना है,
दिमाग को उन्नत बनाना है,
सज्ञान बनकर जीना है,

मुझे भी कुछ लिखना है।

अपने शब्द को रखना है,
विचार की धारा बनाना है,
अक्षर होकर रहना है

८. गड़बड़

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

लंबी कतार और
दीर्घ प्रतीक्षा है
तीव्र संघर्ष और
बड़ी होड़ है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

चलना मुश्किल और
रुकना मिटना है
हवा ठहरती और
बात बहकती है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

इमान नापाक और
लुटना कला है
सच्चाई झुकती और
बुराई उभरती है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

पढ़त मुख और
अनपढ़ सयाना है
भोज तेली और
गंगू राजा है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

मिट्टी बंजर और
दिल खाली है
धन पावन और
तेवर मनभावन है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

इन्सान बिकता और
भगवान सस्ता है
मौत हँसती और
जिंदगी रोती है

यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।

९. शून्य

शून्य, तेरा ही सहारा है।

आरंभ के बाद अंत है
आशा के बाद निराशा है
मिलन के बाद वियोग है
सुख के बाद दुःख है

शून्य, तेरा ही सहारा है।

जिंदगी के बाद मौत है
पाने के बाद खोना है
आने के बाद जाना है
खिलने के बाद मुरझाना है

शून्य, तेरा ही सहारा है।

हँसी के बाद खामोशी है
सुबह के बाद शाम है
चमक के बाद लुप्तता है
मेले के बाद बिखरना है

शून्य, तेरा ही सहारा है।

गती के बाद रुकना है
बहस के बाद सन्नाटा है
चढ़ने के बाद उतरना है
निर्माण के बाद लय है

शून्य, तेरा ही सहारा है।

१०. परतंत्र

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

यह जखड़ देती है, तन-मन को
यह छिन लेती है, सोच-विचार को
यह हर लेती है, हर्ष - उल्हास को

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

यह बाधित करती है, आहार-विहार को
यह तबाह करती है, हौसले-उम्मीदों को
यह बरबाद करती है, वक्त-उम्र को

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

यह बना देती है, गुलाम-मालिक को
यह गिरवी रखती है, वर्तमान-भविष्य को
यह चूस लेती है, खून-पसीने को

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

यह लूट लेती है, ऊर्जा-साधन को
यह घटा देती है, परंपरा-संस्कार को
यह ढो देती है, संस्कृति-व्यवहार को

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

यह हटा देती है, श्रम-लगन को
यह घटा देती है, कौशल्य-क्षमता को
यह डुबो देती है, व्यक्तित्व-स्वामित्व को

यह परतंत्र की शृंखला तोड़ दो....

११. गड़ा हुआ

बीज जो मिट्टी में गड़ा है;
वृक्ष की प्रेरणा का स्रोत है
अब उसका दर्शनमात्र नहीं।
नींव जो जमीन में डाली है;
इमारत के आधार की शिला है
अब उसका संपर्क मात्र नहीं।
अतीत जो भूत में खोया है;
वर्तमान की तरक्की का कारण है
अब उसका स्मरणमात्र नहीं।
बलिदान जो त्याग में रंगा है;
मस्तिष्क के शान का प्रयोजन है
अब उसका नाममात्र नहीं।
रीत जो रिवाज में ढली है;
संस्कृति की उन्नति का तरीका है
अब उसका आचारणमात्र नहीं।
प्रकृति जो शुद्धता से युक्त है;
चैतन्य की धारा का स्रोत है
अब उसका खयालमात्र नहीं।

१२. बूमरँग

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
उल्टी गिनती शुरू होगी
विनाश के द्वार खुल जायेंगे
आसमाँ से मिट्टी में मिल जाओगे
शून्य से भी निचे चलोगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
राजा से भिखारी बनोगे
अकल्पित सा धोखा खाओगे
तबाही का नजारा देखोगे
मूँह छिपाने जगह ढूँढोगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
पाने की जगह खो दोगे
संतोष की जगह रो पड़ोगे
भजन की जगह तमाशा देखोगे
शाबासी की जगह तमाचा खाओगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
प्रायश्चित में जलना पड़ेगा
अपनी मर्यादा जान जाएगा
नाम तो बदनाम हो जाएगा
खुद को बेबस मेहसूस करेगा

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
खाली हाथ रह जाओगे
मूर्ख से भी उपदेश सुनोगे

पत्थर तो फुल की जगह लेंगे
गालीयाँ स्तुती के बदले मिलेंगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
राई की जगह पहाड़ देखोगे
साये से भी डर जाओगे
बेबस अधूरा जान लोगे
निराशा को अर्पण होगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
इस्तेमाल की वस्तु बनोगे
हास्य का आस्पद रहोगे
अपने भी ठुकरा देंगे
गैर भी मुँह फेर देंगे

अगर फाँसे उल्टे पड़े तो...
विपरीत बुद्धी काम करेगी
विनाश को न्यौता दे देगी
अस्तित्व पर आँच जाएगी
अनर्थ घटना घट जाएगी
.... सँभल के

१३. अधूरी समझ

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने सजते मेले देखे हैं; बिखरते नहीं
तूने फूलते बगिचे देखे हैं; उजड़ते नहीं
तूने खिलते फूल देखे हैं, मुरझते नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने बहारें देखी है, अकाल नहीं
तूने जिंदगी देखी हैं, जिंदा मौत नहीं
तूने काँटे देखे है, चुभन नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने जमाने देखे हैं, समशान नहीं
तूने शान देखी है, अपमान नहीं
तूने इन्सानियत देखी हैं, हैवानियत नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने वर्तमान देखा है, भूत नहीं
तूने प्यार देखा है, त्याग नहीं
तूने गीत गाए हैं, जीए नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने आँसू बहाए हैं, रोके नहीं
तूने दर्द दिखाया हैं, छिपाया नहीं
तूने न्याय पाया है, अन्याय नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!
तूने नियत देखी है, नियती नहीं
तूने किताबे पढ़ी हैं, ईन्सान नहीं

तूने हालात देखे हैं, मजबूरी नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!

तूने साथ देखा है, बगावत नहीं

तूने ठुकराना देखा है, पिठ में खंजीर नहीं

तूने अभागा देखा है, टूटती किस्मत नहीं

इसलिए तेरी समझ अधूरी है!

१४. फर्क

फर्क सिर्फ इतना है कि.....

तुम हौसला खो बैठे

मैंने धीरज बनाये रखा

तुम हार मान बैठे

मैंने उम्मीद जगाए रखी

फर्क सिर्फ इतना है कि.....

तुम संतुलन खो बैठे

मैंने सहारा ढूँढ लिया

तुम थककर रुक गए

मैंने कोशिश जारी रखी

फर्क सिर्फ इतना है कि.....

तुने मुसिबते मोड़ ली

मैंने मुसिबते तोड़ दी

तुम ध्यान बिखरते गए

मैंने लक्ष्य बना लिया

फर्क सिर्फ इतना है कि.....

तुम अपनी सोचते गए

मैंने दुनिया पढ़ ली

तुम वक्त लुटाते गए

मैंने वक्त जुटा लिया

फर्क सिर्फ इतना है कि.....

तुम सपने देखते रहे

मैंने सपने जी लिए

तुम फल खोजते रहे
मैंने जड़ पा लिया

फर्क सिर्फ इतना है कि.....
तुम गैरों को पुकारते रहे
मैंने खुद को जगा दिया
तुम साधन तलाशते रहे
मैंने साधन बना लिये

फर्क सिर्फ इतना है कि.....
तुम तकदीर को कोसते रहे
मैंने कर्म को तकदीर मान लिया
तुम बहाने बनाते रहे
मैंने जमाने पा लिए

१५. इतनीसी

बात सिर्फ इतनीसी है की.....
हम ध्यान देकर सुनते नहीं
सुनने के बाद कुछ सोचते नहीं
सोच-विचार से कुछ करते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की...
हम ठीक से देखते नहीं
देखकर कुछ समझते नहीं
समझ-बुझकर चलते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की....
हम समयपर बोलते नहीं
अपनी बात को रखते नहीं
बात से बात बनाते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की.....
हम चूप रहते नहीं
मौन का मोल जानते नहीं
चुप्पी से कुछ कहते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की.....
हम ठीक से पढ़ते नहीं
पढ़कर कुछ सिखते नहीं
सिखकर सबक लेते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की.....
हम मौके पे चौका मारते नहीं
जोश में होश रखते नहीं

सही वक्त को पहचानते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है की.....
समय के ढाँचे में ढलते नहीं
सुनहरे अवसर पाते नहीं
मंझिल को छू लेते नहीं

बात सिर्फ इतनीसी है।

१६. छोटीसी

एक छोटीसी शुरूआत,
बड़ा प्रवाह बना देती है।

एक छोटीसी मुलाकात
लंबी यादगार बन जाती है।

एक छोटीसी चिनगारी,
शोले खड़ा कर देती है।

एक छोटीसी रेखा,
लंबी लकीर बन जाती है।

एक छोटीसी भूल,
कई अनर्थ पैदा करती है।

एक छोटीसी छेद,
काम को बिघाड़ देती है।

एक छोटीसी चिंटी,
हाथी को त्रस्त करती है।

एक छोटीसी घटना
बहुत कुछ कह देती है।

एक छोटीसी कहावत,
खूब अनुभव सुनाती है।

एक छोटीसी करीबी
अपना बना देती है।

एक छोटीसी किरण
जिंदगी रोशन करती है।

एक छोटीसी सफलता,
हौसले बढ़ा देती है।

एक छोटीसी मदद,
हमदर्दी दिखाती है।

एक छोटीसी देरी,
अच्छा मौका गँवाती है।

एक छोटीसी तारीफ़,
मन को जीत लेती है।

एक छोटीसी प्रेरणा,
जिंदगी बदल देती है।

१७. सुलझ गई

वह दिन अब आ गया; जिंदगी में विश्वास हो गया ।
सदियों की प्रतीक्षा अब मिट गई
जमाने की बददुवाएँ तो हट गई
सच की बात पर भी मुँहर लगी

वह दिन अब आ गया; जिंदगी में विश्वास हो गया ।
इन्साफ़ का अकाल अब हट गया
माथे का कलंक तो मिट गया
दामन का दाग भी धुल गया

वह दिन अब आ गया; जिंदगी में विश्वास हो गया ।
शाप को उपशाप अब मिल गया।
सर का बोज तो हल्का हुआ
अज्ञान का अंधेरा भी मिट गया

वह दिन अब आ गया; जिंदगी में विश्वास हो गया ।
भ्रम की निंद अब खुल गई
जड़ की गुत्ती तो सुलझ गई
मन की चुभन भी मिट गई

वह दिन अब आ गया; जिंदगी में विश्वास हो गया ।
दर्द को दवा अब मिल गई
बिघड़ी बात तो बन गई
सही दुनिया भी मिल गई

१८. राज

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने कब तक चलेगा
ना जाने कहाँ पर रुकेगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने क्या भाएगा
ना जाने क्या आएगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने कहाँ जन्नत होगी
ना जाने कहाँ मुक्ती होगी

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने क्या साथ होगा
ना जाने क्या छूट जाएगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने क्या ज्ञात होगा
ना जाने कैसे अज्ञान मिटेगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने कैसी आँस लगेगी
ना जाने कैसी तृप्ती मिलेगी

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने जिंदगी दोबारा मिलेगी
ना जाने सिर्फ मिट्टी में समाएगी

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने क्या गगन छुएँगे
ना जाने क्या अवकाश पाएँगे

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने कुछ भविष्य होगा
ना जाने मौजूदा भी मिट जाएगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने एक तेरा सहारा होगा
ना जाने क्या सब एकही होगा

यह राज तो राज ही रहेगा।
ना जाने क्या अस्तित्व रहेगा
ना जाने क्या सब मिट जाएगा

यह राज तो राज ही रहेगा।

१९. बेमेल

हम तुम्हारे है
तुम हमारे हो
लेकिन, कोई मेल नहीं।
हम साथ है
तुम पास हो
लेकिन, कोई संवाद नहीं।
हम चाहते है
तुम राजी हो
लेकिन, कोई सहमती नहीं।
हम जानते है
तुम समझते हो
लेकिन, कोई बनती नहीं।
हम निभाते है
तुम सँवरते हो
लेकिन, कोई सुबकता नहीं।
हम मिलाते है
तुम जोड़ते हो
लेकिन, कोई निर्माण नहीं।
हम कमाते है
तुम बचाते हो
लेकिन, कोई संचय नहीं।
हम पुकारते है
तुम सुनते हो
लेकिन, कोई प्रतिसाद नहीं।

२०. भव्यता

तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब मुश्किलों से आगे चले
और सब शिकायतों को खारिज करे।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब वक्त को मात दे
और सब दर्द से ऊपर उठे।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब अतीत को समा ले
और सब छूटा पा सके।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब बंधन को तोड़ दे
और सबको अपना सहारा दे।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब हार से उपर उठे
और सब काल में अपराजित रहे।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब पराए को अपना ले
और सब अपमान को निरस्त करें।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब दुःख को मिटा दे
और सब सुख को अक्षय करे।
तूने वह सपना देखा ही नहीं
जो सब हालात को समझ ले
और सब पर्याय को जान ले।
तूने वह सपना देखा ही नहीं,
जो सब अमंगल को मंगल करे
और सब अंधेरा निगल जाए।
तूने वह सपना देखा ही नहीं।

२१. निहाल

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
सदियों की खामियाँ
और मनुष्यों की कमी

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
फैलती जिंदगी
और लूटती प्रकृति

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
विज्ञान की तरक्की
और सयानी सोच

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
पैदाईशी जिज्ञासा
और समन्वय की कला

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
तकनीकी तरक्की
और बदलती आपूर्ति

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
सर्वत्र संचार
और समेटती दुनिया

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
उमड़ता सैलाब
और लगते मेले

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
बढ़ती आबादी
और फैलता इन्सान

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
घटते जंगल
और बढ़ते आशियान

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।
पाप की कहावत
और पुण्य की बदौलत

वह दुर्मुखता अब नहीं रही।

२२. नया सूरज

आज का दिन अलग है
आज की तिथि नई है
आज का सूरज नया है।

आज का नेता अलग है
आज की नीति नई है
आज का सूरज नया है।

आज के आदर्श अलग है
आज की माँग नई है
आज का सूरज नया है।

आज की गरीबी अलग है
आज का अमिर नया है
आज का सूरज नया है।

आज का अखबार अलग है
आज की खबरें नई है
आज का सूरज नया है।

आज का दर्द अलग है
आज की दवा नई है
आज का सूरज नया है।

आज का राजा अलग है
आज का राज्य नया है
आज का सूरज नया है।

आज का जीवन अलग है
आज का समझौता नया है
आज का सूरज नया है।

आज की तस्वीर अलग है
आज की तक्रदीर नयी है
आज का सूरज नया है।

आज का आयना अलग है
आज की प्रतिमा नई है
आज का सूरज नया है।

आज का खेल अलग है
आज के खिलाड़ी नये है
आज का सूरज नया है।

आज का वक्त अलग है
आज की माँग नई है
आज का सूरज नया है।

आज की शान अलग है
आज की पहचान नई है
आज का सूरज नया है।

आज का देवता अलग है
आज का मजहब नया है
आज का सूरज नया है।

आज के फासले अलग है
आज की निकटता नई है
आज का सूरज नया है।

आज का अंदाज अलग है
आज का हिसाब नया है
आज का सूरज नया है।

आज का रुझान अलग है
आज का पैतरा नया है
आज का सूरज नया है।

आज के मतलब अलग है
आज के मालिक नये है
आज का सूरज नया है।

आज का वक्त अलग है
आज के नायक नये है
आज का सूरज नया है।

आज का वर्तमान अलग है
आज की दुनिया नई है
आज का सूरज नया है।

२३. आँखे खोलो ।

अपनी आँखे तुम खोल दो,
आँखों की पट्टी अब हटा दो।

झूठ के लालच में अब ना फँसो
मृगजल के पिछे अब ना दौड़ो
माया के जाल से अब दूर रहो

अपनी आँखे तुम खोल दो,
आँखों की पट्टी अब हटा दो।

पूतना के प्रेम को अब ना पिओ
लोमड़ी के बातोंमें अब ना आओ
मीठे का कड़वापन अब जान लो

अपनी आँखे तुम खोल दो,
आँखों की पट्टी अब हटा दो।

बगुले के ध्यान पे अब ना जाओ
सफेरे के धून पर अब ना डोलो
शेर की ढकी खाल अब पहचान लो

अपनी आँखे तुम खोल दो,
आँखों की पट्टी अब हटा दो।

मगरमच्छ के आँसू पे अब ना तरसो
कल्पना के विलास में अब ना डुबो
सोने का पिंजड़े को अब तोड़ दो

अपनी आँखे तुम खोल दो,
आँखों की पट्टी अब हटा दो।

२४. मज़ाल

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम करे सो लिल्लाह,
कोई करे तो गुनाह।
हम करे सो कायदा,
कोई करे तो बगावत।

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम बोले तो शराफत,
कोई बोले तो कयामत।
हम देंगे तो दानत,
कोई देंगे तो लालच।

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम पाए तो फर्ज,
कोई पाए तो कर्ज।
हम गाए तो कोयल,
कोई गाए तो कौआ।

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम चले तो ढंगसे,
कोई चले तो टेढ़ा।
हम चाहे तो न्याय,
कोई चाहे तो बकवास

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम होंगे तो स्वर्ग,
कोई होंगे तो नरक।

हम रहे तो जहाँपनाह,
कोई रहे तो बेपनाह।

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि-
हम चले तो सैर हुई
कोई चले तो भटकते रहे।
हम रहेंगे तो बसेरा,
कोई रहेंगे तो लुटेरा।

हौसले इतने बढ़ गए हैं कि...

२५. दोरुखा

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को उपर उठाकर;
दुसरे को नीचे दिखाना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को अवसर देकर;
दुसरे को कुचल देना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को कंधे पर बिठाकर;
दुसरे को भगा देना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को मिठाई खिलाते;
दुसरे को भूखे रखना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को तसल्ली देते;
दुसरे की क्षती करना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को रहम दिखाते;
दुसरे से बेरहम होना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को बढ़ा चढ़ाकर;
दुसरे को गिरा देना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को दवा देकर;
दुसरे को दर्द देना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को मजा देकर;
दुसरे को सजा देना

यह तो कोई समानता नहीं!
एक को गले लगाते;
दुसरे को दबा देना

यह तो कोई समानता नहीं!

२६. पैसा

अब पैसों का बोलबाला है।
सबका मुँह खोला है
सबको काम मे लगाया है
सबको चक्कर मे डाला है
सबको सबक सिखाया है
अब पैसों का बोलबाला है।
सबको गिनती पढ़ाई है
सबकी उम्मिदे बढ़ाई है
सब नाते बनाए है
सब रिश्ते तौले है
अब पैसों का बोलबाला है।
सब दुनिया मानती है
झुककर सलाम करती है
सब हिम्मत जुटाती है
डर को भी घटाती है
अब पैसों का बोलबाला है।
उम्र को खिंच देती है
दुनिया की सैर कराती है
सब भोग से मिलाती है
सब शान को बढ़ाती है
अब पैसों का बोलबाला है।
बड़ी ऊर्जा धारण करती है
कामयाबी भी खरीद लेती है
ज्ञान की भी रक्षा करती है
चार-चाँद लगा देती है
अब पैसों का बोलबाला है।

२७. तकाज़ा

यह तो वक्त ही बता देगा.....
जो हुआ वह अच्छा या बुरा
जो किया वह सही या गलत
जो मिला वह कम या जादा
यह तो वक्त ही बता देगा.....
जो खोया वह हानी या प्राप्ती
जो घटा वह शुभ या अशुभ
जो छूटा वह घाटा या मुनाफा
यह तो वक्त ही बता देगा.....
जो पाला वह नीति या अनीति
जो माना वह प्रमाण या अप्रमाण
जो बोला वह सच या झूठ
यह तो वक्त ही बता देगा.....
जो बना वह ठीक या गलत
जो चाहा वह उचित या अनुचित
जो चुना वह पात्र या अपात्र
यह तो वक्त ही बता देगा.....
जो चमका वह हिरा या काँच
जो दिया वह पूरा या अधूरा
जो बोया वह काटा या मिटा
यह तो वक्त ही बता देगा.....
तुम तो सब अनुमान करते रहो।
लेकिन, वक्त भी कुछ तय करता है।

२८. लाईलाज

यह तो लाईलाज है.....

यह वह दर्द है; जिसे कोई दवा नहीं
यह वह रोना है, जिसे कोई रोक नहीं
यह वह तकदीर है, जिसे कोई मिसाल नहीं

यह तो लाईलाज है.....

यह वह जीवन है, जिसे कोई जिंदगी नहीं
यह वह फल है, जिसे कोई चेहरा नहीं
यह वह देना है, जिसे कोई लेना नहीं

यह तो लाईलाज है.....

यह वह दृश्य है, जिसे कोई देखा नहीं
यह वह गीत है, जिसे कोई सुना नहीं
यह वह पल है, जिसे कोई साक्षी नहीं

यह तो लाईलाज है.....

यह वह घाव है, जिसे कोई निशाण नहीं
यह वह जुबान है, जिसे कोई शब्द नहीं
यह वह दास्ताँ है, जिसे कोई बयान नहीं

यह तो लाईलाज है.....

यह वह आसमाँ है, जिसे कोई ठिकाना नहीं
यह वह दस्तूर है, जिसे कोई टाला नहीं
यह वह खामोशी है, जिसे कोई पढ़ा नहीं

यह तो लाईलाज है.....

यह वह दिवानगी है, जिसे कोई दिमाग नहीं
यह वह आक्रोश है, जिसे कोई आवाज नहीं
यह वह दिल्लगी है, जिसे कोई तसल्ली नहीं

२९. आसार

यह बरबादी के आसार है.....

अब बात नहीं; मतलब है
अब दिल नहीं, दिमाग है
अब प्यार नहीं, व्यवहार है
अब प्यास नहीं, ह्वस है

यह बरबादी के आसार है.....

अब जरूरत नहीं, लालच है
अब सुगंध नहीं, दुर्गंध है
अब माँगना नहीं, छिनना है
अब कहना नहीं, सहना है

यह बरबादी के आसार है.....

अब मेल नहीं, बेमेल है
अब रंग नहीं, बेरंग है
अब सूर नहीं, बेसूर है
अब हवा नहीं, तूफान है

यह बरबादी के आसार है.....

अब रोना नहीं, तड़फना है
अब खुशी नहीं, जलन है
अब सेवा नहीं, मेवा है
अब परमार्थ नहीं, स्वार्थ है

यह बरबादी के आसार है.....

अब मुठ्ठी बंद नहीं, खुली है
अब अपनाता नहीं, दिखलाना है
अब खुलापन नहीं, औपचारिकता है
अब आसमाँ देखना नहीं, पैरो में सँभालना है

क्योंकी यह बरबादी के आसार है!

३०. मिट्टी

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो उपज की भूमी है
पैदाईश की जादू है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो रस का स्रोत है
परवरीश की सोच है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो हिरे की खान है
जेवर की शान है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो जल का स्रोत है
हरियाली की जड़ है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो जीव की नींव है
जीवन का आधार है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो अन्न का स्रोत है
भूख की भूगतान है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो वस्तु की बस्ती है
आकार की निर्मिती है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो सच की गवाह है
धूल की नमन है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो शक्ती की धरोहर है
भोजन का अक्षयपात्र है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो दर्द की दवा है
स्वास्थ्य की चाबी है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो मौत की गोद है
चिरनिद्रा का बिस्तर है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....
जो ईश्वर की देन है
कल्पतरू का कारण है

यह तो सिर्फ मिट्टी है.....

३१. आगे बढ़

युग से युग तक
आरंभ से अंत तक
चलते ही रहे हैं हम।
पल से पल मिलाते
कण से कण जोड़ते
कमाते ही रहे हैं हम।
दिल से दिल मिलाकर
प्यार से प्यार लुटाकर
बढ़ते ही रहे हैं हम।
दर्द-जुदाई को सहते
अपने दिल को बहलाते
ढूँढते ही रहे हैं हम।
सुख-दुःख को पाकर
रो-हँसकर फिर
खामोश ही रहे हैं हम।
अपनी बात को सँभालते
अपने मन को समझाकर
आगे ही बढ़ रहे हैं हम।

३२. ढलान

मजबूत इरादे
और कठिन काम
वह चुनौती अब नहीं रही।
चमकती शान
और कुदरती वैभव
वह कृपा अब नहीं रहीं।
निखरता तेज
और अपूर्व विश्वास
वह बहार अब नहीं रही।
सहज सुंदरता
और महज़ लापरवाह
वह सरलता अब नहीं रही।
तरल खुशामद
और खास मिठास
वह मनभावन अब नहीं रही।
जुटी ताकद
और सत्ता भोग
वह स्वाधीनता अब नहीं रही।
अटल परिवर्तन
और सख्त वक्त
वह प्रकृति अब नहीं रही।

३३. राम भरोसे

कोशिश तो बहुत की.....

बिखरे को जुटाने की
खोये को ढूँढने की
टूटते को जोड़ने की
डूबते को बचाने की
लेकिन, अब तो सब राम भरोसे।
कोशिश तो बहुत की.....

हारी पारी जिताने की
गिरते को सँभालने की
लुटते को बचाने की
बिघड़ी को बनाने की
लेकिन, अब तो सब राम भरोसे।
कोशिश तो बहुत की.....

रोते को हँसाने की
दुर्भाग्य को बदलने की
हालात को सुधारने की
जिंदगी को सजाने की
लेकिन, अब तो सब राम भरोसे।
कोशिश तो बहुत की

सुखे को घटाने की
अंधेरे को हटाने की
बैटवारे को टालने की
तूफ़ान को मोड़ने की

लेकिन, अब तो सब राम भरोसे।
कोशिश तो बहुत की

अनहोनी को टालने की
तकदीर को बदलने की
उसूलों को उभारने की
दर्द को मिटाने की
लेकिन, अब तो सब राम भरोसे।

३४. बदलते दायरे...

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

वक्त के साथ इन्सान बदलता है
समय के साथ इन्साफ बदलता है
उम्र के साथ प्यार बदलता है
दुनिया के साथ आसमाँ बदलता है

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

बात के साथ जुबान बदलती है
औकात के साथ हमदर्दी बदलती है
माहौल के साथ आहट बदलती है
दर्द के साथ दवा बदलती है

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

स्थल के साथ पानी बदलती है
कोसों के बाद बाणी बदलती है
दिनों के बाद ऋतू बदलते हैं
हालात के साथ मायने बदलते हैं

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

स्वार्थ के साथ दायरे बदलते हैं
मतलब के साथ रीत बदलती है
युग के साथ कहावते बदलते हैं
दृष्टि के साथ सृष्टि बदलती है

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

मौके के साथ दोस्त बदलते हैं
संधी के साथ दुश्मनी बदलती है

धन के साथ फासले बदलते हैं
समझ के साथ विचार बदलते हैं

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

संकट के साथ लगाव बदलते हैं
हवस के साथ बर्ताव बदलते हैं
हवा के साथ अदा बदलते हैं
दस्तूर के साथ अंदाज बदलते हैं

यहाँ तो सब कुछ बदलता है।

३५. किसान-मजदूर

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
लागत और काम से थक गया हूँ
भूख के मारे व्याकूल हुआ हूँ
पानी से पसीना बहा रहा हूँ
ऋण के बोझ में दबा हुआ हूँ

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
आपदा ने मेरी कमर तोड़ी है
मंडी के दाम ने शरम छोड़ी है
दिन-रात खौफ में जी रहा हूँ
हालात से मैं जूझ रहा हूँ

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
फटा छप्पर, टूटी जूते
आसमाँ की तरफ देख रहा हूँ
सब को हाथ जोड़ रहा हूँ
हाथ फैलाकर माँग रहा हूँ

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
भगवान को अब पुकार रहा हूँ
गले का फंदा देख रहा हूँ
बदली दुनिया घूर रहा हूँ
तरस तरस के मर रहा हूँ

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
अपनों से भी बेबस हुआ हूँ
दर्द की सीमा लाँघ चुका हूँ

टुटते सपने खोज रहा हूँ
सपनों की मिट्टी देख रहा हूँ

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
आशाओं के बीज बो रहा हूँ
उम्मीदों की फसले काट रहा हूँ
जो भी चाहे लूट रहे है
खून-पसिना चूस रहे है

मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।
आँखोंसे आँसू बहा रहा हूँ
बदतर हालत छिपा रहा हूँ
पाँव अखड़कर सो जाता हूँ
अधूरी चादर ढक लेता हूँ
मैं किसान-मजदूर मजबूर हूँ।

३६. गाना

हम गाना गाते हैं
अपने मन को बहलाते हैं
जीवन एक गाना है
इसे ताल सूर से गाना है
राग इसकी पहचानना है
गती की स्त्रोत में बहना है
बिना ताल के है यह गाना अधूरा.....

इस गाने में भरनी है जान
तुम्हें भी शामिल करना है इसमें
सूर में सूर मिलाना है
सारे जग को हमें रुझाना है
बड़ी मौजसे इस जीवन का
सफर हमें तय करना है।

३७. जागो!

सारी रात सोने के बाद,
अब तो जागो मेरे साथी
यह देखो सुबह हुई है
क्या तुम्हें इस सुबह की
कोई किंमत मालूम नहीं?
अरे, इस सुबह से तो
दिन का आरंभ होता है
आखिर इस दिन में तुझ को
बहुत कुछ कर गुजरना है
दिनभर सच्ची मेहनत करके
रात में आराम से सोना है
जागो! वरना देर हो जायगी
मैं तो सही लेकिन,
वक्त तेरे लिए रुकेगा नहीं
नहीं तो तुम भी बस
ऐसे सोते ही रहोगे
आखिर मैं भी चला जाऊँगा
जगाने भी न जाने तूझे
कोई आएगा भी या नहीं

३८. ना!

अकेले हम है तो, कोई गम नहीं
कोई साथ छोड़ दे तो, बुरी बात हुई
कंगाल हम है तो, कोई बात नहीं
सम्मान को चोट लगी तो, अनहोनी हुई
चुप तुम रहे तो, कोई खास नहीं
मुँह फेर दोगे तो, घोर निराशा हुई।
आफत आन पड़े तो, कोई नया नहीं
अपनों ने ठुकराया तो, गहरी चोट हुई
जिंदगी साथ छोड़ दे तो, कोई सिकवा नहीं
जिंदा मौत दोगे तो, नरक यातना हुई।
हौसले हमे छोड़ दे तो, कोई डर नहीं
कृपा-छाया ना रहे तो, बेजान सी हुई
जमानों ने ठुकरा दिया तो, कोई दर्द नहीं
दिल की अगर लगी तो, दवा बेअसर हुई।
आँसू कोई ना पोंछे तो, कोई रोना नहीं
रोने को रोक दोगे तो, बड़ी घुटन हुई।

३९. विश्वास

हमे भी अब विश्वास हुआ है।
अंधेर नहीं देर होती है
सच की गोद भी भरी होती है
हमे भी अब विश्वास हुआ है
अच्छे का भी अच्छा होता है
बूरे का भी बुरा होता है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
पाप का भी घड़ा होता है
भले का भी वक्त आता है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
खामोशी भी बयान करती है
बकबक भी बंद होती है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
मौत के पल भी हसीन होते है
जिंदगी के पल भी जिए जाते है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
मेहनत से भी तरक्की होती है
नेक को भी सलाम होती है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
उसकी भी लाठी होती है
बिघड़ी बात को ठीक करती है
हमे भी अब विश्वास हुआ है।
एक समय हर एक का आता है
एक बार हर कोई जीतता है

४०. वक्त

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

अभी तो तुम मिल रहे थे
अब तो तुम बिछड़ रहे हो
अभी तो तुम आ रहे थे
अब तो तुम जा रहे हो

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

अभी तो हँसा रहे थे
अब तो तुम रूला रहे हो
अभी तो तुम दिखा रहे थे
अब तो तुम छिपा रहे हो

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

अभी तो तुम बता रहे थे
अब तो तुम चुप रहे हो
अभी तो तुम खिला रहे थे
अब तो तुम मुरझा रहे हो

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

अभी तो तुम बुला रहे थे
अब तो तुम हटा रहे हो
अभी तो तुम बढ़ा रहे थे
अब तो तुम घटा रहे हो

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

अभी तो तुम जुटा रहे थे
अब तो तुम बिखेर रहे हो
अभी तो तुम अपना रहे थे
अब तो तुम ठुकरा रहे हो

ऐ वक्त! जरा ठहर जाना!

४१. स्वगत

यह आँखों की धारा नहीं
बिते समय की रेखा है
यह फूट-फूटकर रोना नहीं
घुट-घुटकर जीना है
यह दर्द की दास्ताँ नहीं
दर्द तो अपनी पहचान है
यह उलझनों की गाथा नहीं
विधी का अटल विधान है
यह खाई में गिरना नहीं
खाई की ही पैदाईश है
यह मिली नरक नहीं
कड़वी जनम घूँटी है
यह कोई अचंबा नहीं
आमतौर की बात है
यह जोर से पुकार नहीं
जीवनभर का स्वगत है
यह दिल का टूटना नहीं
टूटे दिल को अपनाना है
यह हमारे शब्द नहीं
सन्नाटों की आवाज है
यह शून्य की अमानत नहीं
ऋण की बड़ी विरासत है
यह नित्य का शोक नहीं
जिंदगी के श्लोक है
यह कोई शिकायत नहीं
प्रभु की ही देन है

४२. फुरसत से

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

अनमोल सी उपज दी है
अद्वितीय सी रचना की है
आकर्षक सी सुंदरता दी है
अनगिणत सी विविधता की है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

खूब सारे रंग बिखर दिए है
बहुत सारे रस भर दिए है
धने से ऋण मिला दिया है
चक्र से जीवन बाँध दिया है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

प्रकृति में शुद्धता समा रखी है
सृष्टि में संतुलन बना रखी है
नियमों में कुदरत को ढाल रखा है
जीव में गुणों को भर रखा है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

खूब ढंग से सजा दिया है
जिंदगी से मौत मिला दिया है
गती से पाँव बाँध दिया है
चक्र से ऋतू घूमा दिया है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

दिन-रात को रोशन किया है
पंचमहाभूतों का वरदान दिया है

सबका उदर-भरण किया है
एक दुसरे को मिला दिया है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

हर एक को अलग पहचान दी है
एक अलग सी लाठी भी रखी है
सबका कर्ता-धर्ता तूही रहा है
फिर भी खुद को अलग रखा है

ओ दुनिया बनानेवाले; फुरसत से तूने बनायी है।

४३. बेमौसम

आज फिर तूफान में फँसे हुए
दिशाएँ फिर हवा में खो गए
आज फिर हाल-बदहाल हुआ
अब तो जीना हराम हुआ।

कल की मुसिबत गई
आज की आफत नई
फिर हौसले डगमगाएँ
आज के फैसले मिट गए

कल की तरह बेसहारा
आज मैं फिर आवारा
फिर मन में डर भरा
आज संदेह से मन भरा

कल थी उम्मीदें रुठी हुई
आज है मंझिले छुटी हुई
अब तो सब सुना-सुना
आज है दिल टुटा-फुटा

कल उम्र थी बहुत बाकी
आज जिंदगी है सिमटी हुई
अब अगर वहीं बेबसी
पूरे जीवन में नहीं वापसी

४४. बेईमान

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनका भला किया
उनसे बदनामी पा लो!
जिनका दुःख हर लिया
उनसे पिड़ा पी लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनको हृदय में बसाया
उनकी नफरत झेल लो!
जिनका सर उठाया
उन्हीं से सर कुचल लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनको साथ ले चले
उनका टेढ़ापन देख लो!
जिनको दवा पिला दिया
उनसे जरह ले लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनको पहचान दिला दी
उनसे अपमान सह लो!
जिनको पाँव पर खड़ा किया
उनसे ठोकर खा लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनको खाई से निकाला
उन्हींसे खाई में गिर पड़ो!

जिनकी जान बख्श दी
उन्ही से जिंदगी गवाँ लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।
जिनकी औकात बढ़ाई
उन्हीसे मर्यादा सीख लो!
जिनकी शहुरत फैलाई
उन्हीसे अक्ल सीख लो!

यह सच्चाई भी तुम जी लो।

४५. दुर्घटना

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
दुनिया की खुशियाँ
मेरे साथ थी रहती
जीवन की उमंगे
मेरे हाथ थी सिमटी

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
धूम सी हवा चलती
दिशाएँ मस्त रहती
हरे भरे पल जीते
सुनहरे अवसर पाते

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
मधुर से गीत गाते
मिठी सी संगीत सुनते
हाथ से हाथ मिलाते
पथ पर साथ निभाते

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
सपनों को सजाते
अपनों को बुलाते
महफ़ील में झुमते
मेले में घुँमते

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
खुला गगन
बहकती हवा

शीतल सा जल
मधुर सा स्वाद

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
स्वस्थ तन और मन
मस्त पवन और गगन
चुस्त शौक और आदत
दुरुस्त सोच और खयाल

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
आँखों में सपने सजाए
साथ में उम्मिदे लिए
मन में उल्हास भरे
दिल में प्यार लिए

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।
वक्त बदला
तकदीर टूटी
दुनिया उजड़ी
बनी बिघड़ी

कुछ क्षण पहले; जिंदगी मेरी आबाद थी।

४६. आम आदमी

..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

सर्दियों में ठिठुरते रहते हैं।
धूप में पसिने छुटते हैं
बरसात में भिगते रहते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

महंगाई से परेशान होते हैं
खर्चे से तंग रहते हैं
बचाने को कमाना कहते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

परपिड़ा पर आँसू बहाते हैं
पिड़ीत को मदद करते हैं
नेकी के रास्ते पर चलते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

भगवान पर श्रद्धा रखते हैं
मूल्यों की जोपासना करते हैं
बदनामी से डर जाते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

सब असुविधा सह लेते हैं
अपमान को पी जाते हैं
खस्ता हाल जी लेते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

गहरी नींद सो जाते हैं
थोड़ी देरी से जग जाते हैं
हृद से जादा सह लेते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

बहुत कुछ अनदेखा कर लेते हैं
दुसरो के आँसू पोछ देते हैं
त्याग में आगे बने रहते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

बंदे को राजा बनाते हैं
मुठ्ठी की ताकद अजमाते हैं
वज्र प्रहार भी कर देते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

राष्ट्र की भक्ती करते हैं
एकता भी बनाते हैं
मिलजुलकर रहते हैं
..... क्योंकि, हम आम आदमी हैं।

४७. अप्रत्याशित

मैंने यह देखा है,
धन और मानवता
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता।

मैंने यह देखा है,
सौंदर्य और बुद्धि
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
चना और दाँत
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
सत्ता और सादगी
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
अमीरी और फकीरी
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
निःशस्त्र और शक्ती
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
हकीकत और जादू
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
हंस और कौआ
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
शून्य और पूर्णता
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
अधिकार और विनम्रता
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
जवानी और होश
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
बुढ़ापा और जोश
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
संसार और परमार्थ
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
कामयाबी और शांती
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

मैंने यह देखा है,
प्रपंच और मोक्ष
एक साथ में,
जो अक्सर नहीं देखा जाता ।

४८. साथ भी

जिंदगी के साथ भी; जिंदगी के बाद भी

चलते तुम्हे रहना है
आगे तुम्हे बढ़ना है
नया तुम्हे खोजना है
पुराना तुम्हे त्यागना है

जिंदगी के साथ भी; जिंदगी के बाद भी

बिती बाते भूलनी है
नई बाते करनी है
नये रिश्ते, नये लोग
नया देस, नया भेंस

जिंदगी के साथ भी; जिंदगी के बाद भी

बिती यादें दफनाकर
नई मंझिले अपनाकर
बिते कल को विदाई
नए कल को बधाई

जिंदगी के साथ भी; जिंदगी के बाद भी

४९. राम नाम...

तुम बनाओ या बिघाड़ो
तुम बैसाओ या उजाड़ो
आखिर, राम नाम सत्य है।

तुम डूँटो या हट जाओ
तुम सँभालो या गिर जाओ
आखिर, राम नाम सत्य है।

तुम कहो या चुप रहो
तुम करो या छोड़ दो
आखिर, राम नाम सत्य है।

तुम भागो या ठहर जाओ
तुम बचाओ या लुट जाओ
आखिर, राम नाम सत्य है।

तुम जागो या सो जाओ
तुम जिओ या मर जाओ
आखिर, राम नाम सत्य है।

५०. सर सलामत हो !

खेलो;
कूदो
फूलो;
फलो

लेकिन सर सलामत रहने दो ।

गिरो;
पड़ो
फूटो;
टूटो

लेकिन सर सलामत रहने दो ।

बढ़ो;
लड़ो
हटो;
डूँटो

लेकिन सर सलामत रहने दो ।

जानो;
मानो
सोचो;
समझो

लेकिन सर सलामत रहने दो।

सजो;
सँवारों
झूमो;
नाचो

लेकिन सर सलामत रहने दो।

कहो ;
सुनो
भागो;
दौड़ो

लेकिन सर सलामत रहने दो।

उठो;
रूठो
मरो;
मिटो

लेकिन सर सलामत रहने दो।

५१. ज़मीर

बेरहम इन्सान भी
रहम चाहता है ।
पत्थर दिल भी
फूल चाहता है ।
बेवफा सनम भी
वफा चाहता है ।
बेईमान आदमी भी
इमान चाहता है ।
नाकाम बंदा भी
कामयाबी चाहता है ।
कटि पतंग भी
सहारा चाहता है ।
झूठा लिबास भी
तारीफ चाहता है ।
ढलता दिन भी
रुकना चाहता है ।
घटता तेज़ भी
छिपना चाहता है ।
लावारिस किस्सा भी
वारिस चाहता है ।
बढ़ता कारवाँ भी
साया चाहता है ।
लाजवाब नुस्खा भी
जबाब चाहता है ।
मिटता जीवन भी
जीना चाहता है ।

५२. पहेलियाँ

बड़ी-बड़ी बातों की
रुठी हुई कहानियाँ
मिठे-मिठे यादोंकी की
कड़वी हुई बेचैनियाँ
छिपि-छिपाई सच की
उजागर हुई पहेलियाँ
बुझी-बुझाई दीपक की
रोशन हुई वादियाँ
खिली-खिलाई कलीयों की
मुरझी हुई नादनियाँ
रुखी-सुखी जिंदगी की
दमकती हुई सच्चाईयाँ
भिगी-भिगी बातों की
ठिठुरती हुई सर्दियाँ
बची-खुची इज्जत की
सिमटती हुई गलीयाँ
हटी-मिटी हौसलों की
बेखौफ हुई नजरियाँ
सोई-खोई यादों की
सजती हुई अंगडाईयाँ
भूली-बिसरी धून की
सुनहरी हुई परछाईयाँ

५३. व्यर्थ बात

साद को अगर प्रतिसाद मिले
तो समझो कोई बंध है
वरना बात व्यर्थ है....
दर्द को अगर महसूस करे
तो समझो कोई हमदर्द है
वरना बात व्यर्थ है....
बात को अगर सुना करे
तो समझो कोई साथ है
वरना बात व्यर्थ है....
पहल को अगर साथ दे
तो समझो कोई अपना है
वरना बात व्यर्थ है....
आँसू को अगर पोंछता है
तो समझो कोई तेरा है
वरना बात व्यर्थ है....
मदद को अगर याद रखे
तो समझो कोई कृतज्ञ है
वरना बात व्यर्थ है....
तड़फ को अगर पहचानते है
तो समझो कोई संवेदना है
वरना बात व्यर्थ है....

५४. आगाज

बेहतर नतिजे बाकी है।
वक्त आगे बढ़ना है
काफ़ी दूर चलना है
बेहतर नतिजे बाकी है।
अलग रास्ते चलने है
नई डगर आनी है
बेहतर नतिजे बाकी है।
अलग सोच होनी है
सुंदर सपने सजने है
बेहतर नतिजे बाकी है।
खूब गहराई खोजनी है
अनमोल रतन पाने है
बेहतर नतिजे बाकी है।
अद्भूत कल्पना होनी है
अप्रतिम साकार करना है
बेहतर नतिजे बाकी है।
उँची छलाँग लगानी है
नई दुनिया पानी है
बेहतर नतिजे बाकी है।

५५. एक

एक सपना पूरा हुआ
एक अधूरा संपन्न हुआ
एक उम्र पा गए
एक आसमाँ छू गए
एक प्यास बुझ गई
एक चाहत रुक गई
एक विरासत पा गए
एक अतीत जी गए
एक मुकाम पा गए
एक मंजिल छू गए
एक अनंत मान गए
एक नायक जान लिए
एक दर्शन हो गए
एक तृप्ती पा गए
एक आसक्ती छोड़ दिए
एक मुक्ती पा गए

५६. शब्द

शब्द एक आधार है
शब्द एक पहचान है
शब्द एक ज्ञान है
शब्द एक सम्मान है
शब्द एक अंगार है
शब्द एक बौछार है
शब्द एक आघात है
शब्द एक अस्त्र है
शब्द एक जबाब है
शब्द एक प्रेरणा है
शब्द एक हिंसा है
शब्द एक भाष्य है
शब्द एक वर्तमान है
शब्द एक बेबसी है
शब्द एक चेतना है
शब्द एक संवेदना है
शब्द एक दृश्य है
शब्द एक मेल है
शब्द एक संस्कार है
शब्द एक संस्कृति है
शब्द एक भरोसा है
शब्द एक शक है
शब्द एक प्रतिक्रिया है
शब्द एक संवाद है
शब्द एक शिक्षा है
शब्द एक शिकायत है
शब्द एक ललकार है

शब्द एक स्वीकृति है
 शब्द एक सूर है
 शब्द एक प्रार्थना है
 शब्द एक अस्तित्व है
 शब्द एक हुंकार है
 शब्द एक ओंकार है
 शब्द एक जिंदगी है
 शब्द एक शौक है
 शब्द एक कद्र है
 शब्द एक इशारा है
 शब्द एक नाम है
 शब्द एक पहचान है
 शब्द एक संकेत है
 शब्द एक दिल्लगी है
 शब्द एक साहित्य है
 शब्द एक महिमा है
 शब्द एक धुन है
 शब्द एक पूँजी है
 शब्द एक प्रस्तुती है
 शब्द एक विधान है
 शब्द एक संदेश है
 शब्द एक मंत्र है

सचिन शरद कुसनाळे एम. ए. (समाजशास्त्र), डी. एड्.

जन्मतिथि : ११/५/१९७४

स्थायी पता : गाँव म्हैसाळ - कागवाड (बाजुंझी) पिनकोड नं. ४१६ ४०९,
 तहसिल-मिरज, जिला- सांगली (महाराष्ट्र)

भ्रमणधनी : ०९४२११०५०४८, ०९८८९८४६३३९

Email : sachinkusanale1008@gmail.com



• नौकरी -

प्राथमिक अध्यापक (सन १९९७ से सेवारत)

सांप्रत-जिला परिषद पाठशाला, गणेशवाडी (माळभाग),

तहसिल - शिरोळ, जिला - कोल्हापुर

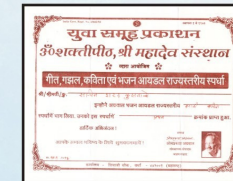
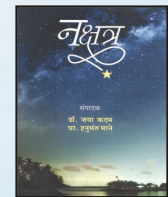
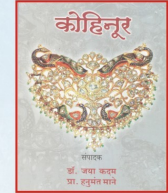
• लेखनकार्य -

‘कोहिनूर’ और ‘नक्षत्र’ इन प्रातिनिधीक काव्यसंग्रहोंमें कविताएँ प्रकाशित।

विविध पत्र-पत्रिकाएँ, दिवावली अंक तथा समाचार पत्रों में कविताएँ और लेख प्रकाशित।

• पुरस्कार -

आयडॉल पुरस्कार (युवा प्रकाशन समूह, वर्धा की ओर से सन २०१५)



• निःशब्द- शब्द - काव्यसंग्रह

• सचिन शरद कुसनाळे

• स्वागत मूल्य: ६०/-

• कवितासागर प्रकाशन, जयसिंगपुर

• ०२३२२-२२५५००, ९९७५८७३५६९

• KavitaSagarpublication@gmail.com

